19.0 रूसो के प्रकृतिवादी विचारधारा की आधुनिक सन्दर्भ में उपादेयता

- **ऐश्वर्या सिंह**, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ
  ई.मेल- aishwarya.ballia@gmail.com

शोध-सार

रूसो प्रकृतिवादी विचारधारा का समर्थक था। उसके प्रकृतिवादी विचारों का प्रभाव उसके शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर पड़ा है। प्रस्तुत अध्ययन में रूसों के प्रमुख विचारों जैसे- मनुष्य को प्रकृति जीवन जीने योग्य बनाना, बालकेन्द्रित शिक्षा पर बल, निषेधात्मक शिक्षा पर बल, सामाजिक संस्थाओं का विरोध, प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन तथा स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार का अध्ययन किया गया है। रूसो ने शिक्षा के सभी पहलुओं पर विचार किया है, किन्तु प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर रूसों के विचारों का अध्ययन नहीं किया गया है। बल्कि रूसो के ऐसे विचार जो सम्पूर्ण शिक्षा को प्रभावित करते है, का अध्ययन किया गया है। रूसो के अनुसार- 'सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अन्दर से प्रस्फुटित होती है, यह व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है। प्रस्तुत अध्ययन के पश्चात हम रूसो के प्रमुख विचारों का वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन कर सकेगें।

प्रमुख बिन्दु- *प्रकृतिवादी, निषेधात्मक शिक्षा, समाज का विरोध, बाल केन्द्रित शिक्षा।*

प्रस्तावना

शिक्षा के इतिहास में रूसों ऐसा व्यक्ति है जिसकी सबसे अधिक निंदा की जाती है तथा जिसके सम्बन्ध में सबसे अधिक भ्रमपूर्ण बातें कही जाती है। उस नराधम के सम्बन्ध में कहा जता है कि जन्मते ही उसने अपने बच्चों को फाडण्डलिंग अस्पताल में मार डाला। यद्यपि उसकी स्वयं की स्वीकारोक्ति से यह बात समर्थित है, पर निश्चय यह एक गढ़ी हुई बात है। रूसो का जन्म 1712 में जेनेवा में हुआ था। इसका पूरा नाम जीन जैक्स रूसो था। उसके जन्म के तुरन्त बाद ही उसकी माता का देहान्त हो गया। उसका पालन-पोषण उसकी लापरवाह चाची ने किया। उसका पिता एक घड़ी साज था, वह भी अपने बेटे की तरफ अधिक ध्यान नहीं देता था। अतः बालक रूसो दिन भर इधर-उधर घूमता-फिरता और स्विजरलैण्ड के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेता था। धीरे-धीरे उसका प्रकृति प्रेम बढ़ गया और वह प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक हो गया। किन्तु पिता और चाची की लापरवाही से उसमें अनेक दुर्गुण आ गये। 6 वर्ष की अवस्था में उसने अनेक उपन्यास पढ़ डाले। कुछ धार्मिक तथा कुछ ऐतिहासिक पुस्तकों का भी अध्ययन किया। इस कारण उसकी मूल प्रवृत्तियां एवं आत्माभिव्यक्ति की भावना उद्दीप्त हुई। विद्यालय की शिक्षा उसे अपनी ओर आकृष्ट न कर सकी क्योंकि उन दिनों विद्यालय की शिक्षा में बनावटीपन और कठोरता अधिक थी। 1735 ई0 के अन्तिम दिनों की बात है कि एक दिन उसके पिता ने दिन भर उसे घर बैठे रहने पर भर्त्सना की तो उसने अध्यापकी की इच्छा प्रकट की और कहा- थोड़ा और अनुभव प्राप्त करके कुछ वर्षों के बाद मैं किसी योग्य युवक का अध्यापक हो जाऊँगा. मैं स्पष्ट रूप में यह स्वीकार करता हूँ कि, जिसकी ओर मेरी थोड़ी रूझान है (रस्क आर0 रॉबर्ट, महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांत, पृ0सं0-145)

तमाम कठिनाईयों का सामना करते हुए रूसो ने जेनेवा छोड़ने का निश्चय किया। वहां से भाग कर वह फ्रांस चला गया। यही से उसके जीवन का नया मोड़ आता है। फ्रांस में जाकर उसने साहित्य का अध्ययन शुरू कर दिया। रूसो के ऊपर प्लेटो की 'दी रिपब्लिक' और डीफो की 'राबिन्सनक्रूसो' नामक पुस्तकों का अमिट प्रभाव पड़ा। फ्रांस में लुई पन्द्रहवां के शासन में लोगों के दुखों और कठिनाईयों को देखकर तथा स्वयं के जीवन के कटु अनुभवों के आधार पर उसने यह निष्कर्ष निकाला कि समाज अत्यंत ही दूषित है। उसने एक स्थान पर लिखा भी है-

प्रकृति के नियामक के हाथों से आने वाली प्रत्येक वस्तु अच्छी होती है किन्तु मनुष्य के हाथ में आकर वह दूषित हो जाती है। (शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ0सं0-131)

रूसो के **प्रकृतिवादी दर्शन** की **प्रमुख विशेषताएं** -

1.मनुष्य को **प्रकृत जीवन बिताने योग्य बनाना**- रूसो के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को प्रकृत जीवन बिताने योग्य बनाना है। शिक्षा द्वारा हम बालक में कुछ नया नहीं उत्पन्न करते, अपितु मानव संसर्ग के परिणाम स्वरूप जो उसमें कृतिमता का समावेश होता है, उससे उसकी रक्षा करते है। रूसो प्रतिष्ठित सामाजिक संस्थाओं का कटु अलोचक है। रूसो के अनुसार, ''रोजमर्रा के व्यवहार को (समाज सम्मत व्यवहार को) बदल डालो और सर्वदा तुम्हारा कृत्य सही होगा।'' (ओड एल0के0, शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, पृ0सं0-24) वह और आगे बढ़कर कहता है ''मानवीय संस्थाएं मूर्खता तथा विरोधाभास के समूह है। परन्तु रूसो प्रकृति को ईश्वरीय सृष्टि मानता है तथा बालक को ईश्वरीय कृति। उसका मानना है कि जब तक बालक की प्रकृति अपने प्रकृत रूप में रहती है तब तक वह सद्गुणी, शुभ तथा श्रेष्ठ रहती है, परन्तु मनुष्य के सम्पर्क में आकर वह विद्रूप हो जाती है। रूसो कहता है, '' ईश्वर सब वस्तुएं अच्छी बनाता है, मनुष्य उसमें हस्तक्षेप करता है और तब वे अनिष्टकारी बन जाती है।'' (ओड0 एल0के0, शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि पृ0सं0-24)

अतः रूसो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालकों में अन्तर्निहित प्रकृति (अर्थात दैवी) स्वभाव की रक्षा करना है। यह उद्देश्य किसी भी प्रकार से आदर्शवादी उद्देश्य से भिन्न नहीं माना जा सकता। रूसो कट्टर प्रकृतिवादी था किन्तु ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता था। रूसो बालक को ईश्वर की पवित्र कृति मानता है। उसके अनुसार प्रकृति निर्माता के हाथ से जो भी वस्तु उत्पन्न होकर आती है, वह पवित्र होती है, परन्तु मनुष्य के हाथों में आकर उसका अधः पतन होने लगता है। वह बालक को जन्म से अच्छा तथा सद्गुणी मानता है, और शिक्षा द्वारा इस प्राकृतिक अच्छाई को नष्ट न करने की सलाह देता है। उसके अनुसार बालक ''लघु वयस्क'' नहीं है, और शिक्षा द्वारा उसे ''वयस्क बनाने का प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है, अपितु बालक को बालक रहने देना चाहिए।''

2.बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल - रूसो प्रकृति का एक अर्थ ''स्वभाव'' भी लेता है उसके परवर्ती प्रकृतिवादियों ने इस अभिप्रेतार्थ के आधार पर शिक्षा की मनोवैज्ञानिक धारा का आरम्भ किया तथा बाल-प्रकृति को समझने पर आग्रह दिया और इस प्रकार ''बालकेन्द्रित शिक्षा'' के नाम से जानी जाने वाली विचारधारा का उद्गम प्रकृतिवाद से हुआ।

बाल केन्द्रित शिक्षा के अनुसार बाल-प्रकृति को स्वतंत्र रूप से प्रस्फुटित होने देना चाहिए इस विचारधारा के अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जिसमें बाल-प्रकृति, उसकी सहज शक्तियाँ तथा रूचियाँ स्वतंत्र रूप से विकसित होती है, तथा शिक्षक का मार्गदर्शन न्यूनतम रहता है। बालक की स्वतंत्रता में बाधा डालने वाले प्रत्येक प्रयास को निन्दनीय माना जाता है।

रूसो के अनुसार बालक निम्नलिखित तीन स्रोतों से शिक्षा ग्रहण करता है:

रूसो का मत है कि बालक का विकास प्रकृति तथा पदार्थ के माध्यम के माध्यम से होता है, परन्तु जब मनुष्य अर्थात शिक्षक उसमें हस्तक्षेप करने लगता है, तो बालक के सहज विकास में न केवल बाधा पड़ती है, अपितु बालक की कुशिक्षा का आरम्भ होता है। रूसो के अनुसार शिक्षक पर समाज के कुसंस्कारों का प्रभाव इतना पड़ गया होता है कि वह बालक के सद्गुणी बनाने का ढोंग भले ही करें, वह उन्हे सद्गुणी बना नहीं सकता, क्योंकि वह स्वयं सद्गुणी नहीं है। इस प्रकार रूसो बालक की आरम्भिक शिक्षा में शिक्षक को कोई स्थान नहीं देना चाहता। उसके अनुसार प्रारम्भिक अवस्था में माता-पिता ही बालक के सहज शिक्षक होते हैं और उन्हे भी कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए तथा बालक को अपनी प्रकृति के अनुसार विकास करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए।

3.निषेधात्मक शिक्षा पर बल - रूसो ने शिक्षा के दो प्रकार बताएं हैं-

1. निश्चययात्मक शिक्षा
2. **निषेधात्मक शिक्षा**

उसने निश्चयात्मक शिक्षा का विरोध किया है और निषेधात्मक शिक्षा का समर्थन। रूसो ने अपने समय में प्रचलित शिक्षा को निश्चयात्मक शिक्षा कहा है और इसका घोर विरोध करते हुए इसके विपरीत चलने का सुझाव दिया है। निश्चयात्मक शिक्षा में नैतिकता और चरित्र को नाम पर बालकों को ऐसी शिक्षा दी जाती थी जो उनके मनोविज्ञान के अनुकूल नहीं हुआ करती थी। निश्चयात्मक शिक्षा मनुष्य की प्रकृति को बुरा समझती है और उसको सुधारने का प्रयास करती है। रूसो इस विचार से सहमत नहीं था। निश्चयात्मक शिक्षा का विरोध करते हुए कहा कि '' उस क्रूर शिक्षा के बारे में हम क्या विचार करें जो वर्तमान को अनिश्चित भविष्य पर बलि दे देती है, बालक पर भाँति-भाँति के बंधन लगा देती है, उस काल्पनिक सुख के लिए जो वह कदाचित् कभी न भोगेगा, बहुत पहले से उसे दुखी बनाकर दी जाती है।'' **(**शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ**0**सं**0-133)**

रूसो ने प्रचलित शिक्षा, जिसे उसने निश्चयात्मक शिक्षा कहा है का विरोध किया और उसके विपरीत निषेधात्मक शिक्षा का समर्थन एवं प्रचार किया। निषेधात्मक शिक्षा का उद्देश्य बालक की प्रकृति, प्रवृत्तियों और शक्तियों के अनुसार शिक्षा देना है। रूसो की नकारात्मक (निषेधात्मक) शिक्षा का नैतिक पक्ष सद्गुण अथवा सत्य की शिक्षा देना नहीं है, बल्कि मन को त्रुटियों से तथा गलती करने की भावना से बचाये रखना है। निषेधात्मक शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है ''मैं निषेधात्मक शिक्षा उस शिक्षा को कहता हूं जो प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्रदान करने से पहले उन अंगों को, जो इसके साधन है, पूर्ण बनाने और इन्द्रियों के उचित अभ्यास द्वारा तर्क (विवेक) का मार्ग तैयार करने का प्रयत्न करती है। निषेधात्मक शिक्षा का अर्थ निठल्लापन नहीं वरन् इससे बिल्कुल भिन्न है। यह सद्गुण नहीं प्रदान करती, यह दुर्गुणों से बचाती है, यह सत्य बोलना नहीं सिखलाती, यह झूठ बोलने से बचाती है। यह बालक को उस मार्ग की ओर उन्मुख करती है जो उसे सत्य की ओर ले जायेगा। जबकि वह इसे पहचानने और इससे प्रेम करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।'' **(**शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ**0**सं**0** 134**)**

इस प्रकार निषेधात्मक शिक्षा का आशय यह है कि बालक को उसकी आयु, शक्ति, रूचि और प्रवृत्ति के अनुसार शिक्षा प्रदान करना चाहिए। रूसो ने निषेधात्मक शिक्षा का समर्थन बाल्यावस्था के लिए किया है। उसका विचार है कि बालक हर दृष्टि से साधु प्रकृति का होता है, उसमें कोई बुराई नहीं होती अतः उसकी शिक्षा भी स्वाभाविक, अकृत्रिम और इस दूषित समाज से हटकर होनी चाहिए।

4.समाजिक संस्थाओं का **विरोध**- रूसो कट्टर प्रकृतिवादी था उसने सामाजिक संस्थाओं जैसे विद्यालय का विरोध किया क्योंकि उसका मानना था कि विद्यालय के कड़े अनुशासन में बालक की प्रकृति नष्ट हो जाती है। ''डिस्कोर्सेज ऑन आर्ट्स एण्ड साइन्सेज'' में रूसो की जो समाज विरोधी विचारधारा व्यक्त हुई है, उसकी झलक हमें 'एमिले' में ही मिल जाती है। और उसके फलस्वरूप उसकी शिक्षा- पद्धति दो परस्पर विरोधी खण्डों में विभक्त दिखती है-
अ- वयस्कता से पूर्व प्राकृतिक अथवा नकारात्मक शिक्षा तथा
ब- उसके बाद नैतिक अथवा सामाजिक शिक्षा।

अरस्तू ने 'पॉलिटिक्स' में लिखा है कि मानव प्रकृत्या सामाजिक अथवा राजनीतिक प्राणी है और इस रूप में राज्य वस्तुतः प्रकृति की रचना है। सर्वांगपूर्ण राज्य में मनुष्य भी अच्छा ही होगा। पर रूसो प्रकृति तथा समाज में मूलभूत रूप में संघर्ष स्वीकार करता है। उसने लिखा है - ''प्रकृति तथा समाज में से किसी एक से संघर्ष करने को बाध्य होने पर, व्यक्ति को मनुष्य तथा समाज में से किसी एक को चुनना पड़ेगा। दोनो दृष्टियों से एक साथ प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता।'' **(**आर**0** रस्क रॉबर्ट, महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांत पृ**0**सं**0-**165**)**

रूसो ने लिखा है- ''एमिले में प्रशिक्षण का लक्ष्य पहले आदमी है और बाद में समाज।'' **(**आर**0** रस्क रॉबर्ट,महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांत, 165**)**

रूसो सामज के प्रत्येक व्यक्ति को दूषित मानता है वह कहता है कि बालक की प्रकृति पाप रहित होती है किन्तु दूषित समाज के व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर वह अपना स्वभाव जो कि पवित्र है उसे त्यागने लगता है।

अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए उसने कहा है - ''व्यक्ति के लिए उचित शिक्षा वस्तुतः उसके वातावरण से सम्बन्ध स्थापन है। व्यक्ति अपनी भौतिक प्रकृति के आधार पर ही अपने वातावरण को समझता है। अतः उसे अन्य अनुभवों की अपेक्षा से पहले स्वयं का अध्ययन करना चाहिए। यह शैशवास्था की बात है जब व्यक्ति अपनी नैतिक प्रकृति के प्रति जागरूक हो जाय, तो उसे अपने साथ में आने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा से अपना अध्ययन करना चाहिए यह काम जीवन पर्यन्त का है। (आर0 रस्क रॉबर्ट, महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांत, पृ0सं0-165)

रूसों के अनुसार प्रकृति ही बालक की महान शिक्षिका है। अतः बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित होने के लिए प्राकृतिक वातावरण प्रस्तुत करना चाहिए। रूसो के अनुसार वर्तमान समय में शिक्षण संस्थाओं का वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि उसमें बालक का विकास सर्वथा असम्भव है। रूसो के अनुसार, ''प्रकृति के निर्माता के हाथों में सभी वस्तुएं अच्छे रूप से मिलती है परन्तु मानव के हाथों में आते ही वे सब दूषित हो जाती है।'' (जायसवाल सीताराम, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ0सं0-124)

रूसो के अनुसार शिक्षा बालक के लिए है, बालक शिक्षा के लिए नही हैं, अतः शिक्षण प्रक्रिया का निर्धारण अध्यापक अथवा अन्य कोई बाहरी अभिकरण नही कर सकता, क्योंकि ये सभी इस दूषित समाज के ही अंग है। स्वयं बालक की प्रकृति द्वारा उसका निर्धारण होना चाहिए।

5. प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन- प्रकृतिवादी रूसो मुक्त्यात्मक अनुशासन का समर्थन करता है, जिसके अनुसार बालक पर किसी प्रकार का वाह्य दबाव नहीं डाला जाता। बालक न तो जन्म से बुरा है और न ही उसमें आदिम पाप का होना अनिवार्य है। प्रकृति स्वयं बालक को संयमित एवं अनुशासित बनाने में सहायक होती है। यदि बालक असंयमी अथवा अनुशासनहीन बनता है, तो उसकी स्वतंत्रता बाधित हो जाती है, और इस प्रकार प्रकृति उसे स्वयं दण्डित कर देती है। ''प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन'' प्रकृतिवादियों (रूसो का भी) का नारा है। इस उपपत्ति के अनुसार वांछनीय व्यवहार के लिए प्रकृति स्वयं पुरस्कृत करती है तथा अवांछनीय व्यवहार के लिए दण्ड देती है। इससे यह भी अभिप्रेत निकाला जा सकता है कि प्रकृत द्वारा स्वीकृत व्यवहार अच्छा है तथा प्रकृति द्वारा दण्डित व्यवहार बुरा तथा असंयत है। वांछनीय व्यवहार' के सम्बन्ध में भी उसकी धारणा सामान्य धारणा से भिन्न है। रूसो मानता है कि समाज सम्मत व्यवहार ही अच्छा व्यवहार नहीं है, अपितु मनुष्य का अकृत्रिम सहज व्यवहार ही वांछनीय है। बालक को यह अनुभूति करवानी चाहिए कि उसके व्यवहार का नियन्ता तथा नियामक वह स्वयं है, न कि समाज अथवा विद्यालय। जब विद्यालय द्वारा निर्धारित वाह्य नियम उस पर लादे जाते है, तो वह उनके प्रति विद्रोह करता है, तथा विद्यालय द्वारा आरोपित दण्ड से उसके मन में विद्यालय तथा पठन-पाठन के प्रति आक्रोश उत्पन्न होता है, जबकि प्राकृतिक दण्ड को वह अपरिहार्य तथा सहज मानता है। प्रकृतिवादी रूसो सलाह देता है कि यदि बालक को अवांछनीय कृत्य से रोकना आवश्यक है अथवा दण्ड देना अपरिहार्य हो, तो भी यह सब इस प्रकार होना चाहिए जिससे छात्र को वह प्राकृतिक परिणाम जैसा लगे। उदाहरणतः यदि छात्रावास के कमरे की खिड़की का काँच कोई विद्यार्थी तोड़ देता है, तो उसे अन्य किसी प्रकार दण्डित करने की अपेक्षा जाड़े की रात में यह अनुभव होने दिया जाये, कि खिड़की का काँच तोड़ने का प्राकृतिक परिणाम शीत में ठिठुरना होता है। यदि छात्र गन्दा रहता है तो उसे अन्य छात्रों के साथ न खेलने दिया जाए, इससे उसकी स्वतंत्रता बाधित होगी तथा वह प्राकृतिक परिणाम के आधार पर अनुशासित होगा।

रूसो का नारा था- ''मनुष्य तू प्रकृति की ओर लौट तेरा कल्याण होगा। (शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ0सं0-123)

उसका प्रकृति की ओर लौटने का अर्थ व्यक्ति को प्राकृतिक स्वभाव के अनुसार प्रकृति के सम्पर्क में रहकर वैयक्तिक विकास का अवसर देना था। रूसो के अनुसार मनुष्य की सहज भावनाओं और आवेगों का सभ्यता के नाम पर दमन न किया जाये। मनुष्य एक भावनाशील प्राणी है जो अपने अन्तःकरण द्वारा निर्देशित होता है। रूसो बालक को पूर्ण स्वतंत्रता देने का पक्षपर या उसका मानना था कि अगर बालक को विकास करने का स्वतन्त्र अवसर न दिया जाये तो उसका विकास कुंद हो जायेगा। रूसो का मानना था कि बालक जन्म के बाद जब इस संसार में आता है तो उस पर हर तरफ से सामाजिक दबाव पड़ता है। रूसो ने लिखा है -

'' मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है किन्तु वह बाद में सब जगह से जंजीर से बाँध दिया जाता है।'' (शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ0सं0-124)

6. स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार - रूसो ने स्त्री- शिक्षा का जो कार्यक्रम निर्धारित किया है वह बड़ा ही अनुदार दिखाई पड़ता है। उसके अनुसार- स्त्री शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य पुरूष के सुख साधनों में वृद्धि करना है। उसने लिखा है कि ''स्त्री पुरूष की प्रसन्नता के लिए है।'' (शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृसं0-134)

रूसो का मत है कि स्त्रियों को सर्वप्रथम शारीरिक शिक्षा देना आवश्यक है क्योंकि कोई भी स्त्री पुरूष को तभी प्रसन्न रख सकती है जब स्वयं स्वस्थ्य एवं सुन्दर होगी। स्वस्थ एवं सुन्दर स्त्री ही अच्छे संतान को उत्पन्न कर सकती है। उसका मानना है कि स्त्रियों को गृहकार्य में निपुण बनाने की चेष्टा की जानी चाहिए। उन्हे सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, चित्रकारी आदि की शिक्षा दी जानी चाहिए। रूसो का विचार है कि स्त्री-शिक्षा इस प्रकार हो जो उसमें आज्ञापालन और परिश्रम की प्रवृत्ति उत्पन्न कर सके। प्रत्येक स्त्री को अपने माता-पिता एवं पति के आज्ञा का पालन किए बिना किसी परेशानी के करना चाहिए तथा अपने साथ होने वाले अन्याय को भी खुशी के साथ स्वीकार कर लेना चाहिए।

रूसो के अनुसार प्रत्येक स्त्री को चाहिए कि वह पुरूषों के स्वभाव का अध्ययन करके उसी के अनुकूल आचरण करे। स्त्री को पुरूष के आज्ञानुसार चलना चाहिए और वे ही कार्य करने चाहिए जो पुरूष को अच्छे लगे। दूसरे शब्दों में उसे पुरूष-मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। बिना इस ज्ञान के वह पुरूष के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकती है यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि रूसो स्त्री को दर्शन, गणित, विज्ञान आदि गूढ़ विषयों की शिक्षा नहीं देना चाहता बल्कि वह स्त्रियों को एक आदर्श गृहणी के रूप में देखना चाहता है।

रूसो ने लिखा है कि ''स्त्री को पुरूषों की भावनाओ को उनके वार्तालाप को, कार्यों, दृष्टि और भाव भंगिमाओं आदि के माध्यम से जानना चाहिए।'' (शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा, शिक्षा के दार्शनिक आधार, पृ**0सं0** 135)

रूसों स्त्रियों की धार्मिक शिक्षा में विश्वास करता है। इस सम्बन्ध में उसका कहना है कि उन्हे प्रारम्भिक स्तर से ही धर्म में रूढ़िबद्ध ढंग से शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। रूसो ने लिखा है-

''प्रत्येक लड़की को अपनी माता का धर्म तथा प्रत्येक पत्नी को अपने पति के धर्म का पालन करना चाहिए।''
नैतिक शिक्षा का निर्धारण जनता द्वारा प्रदान की गई सम्मतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। अर्थात् स्त्रियों की शिक्षा में जनमत को अधिक ध्यान में रखा जाये और उन्हीं बातों को स्थान दिया जाए जो जनता द्वारा मान्यता प्राप्त हों।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन में हमने रूसो का संक्षिप्त जीवन-परिचय एवं उसके कार्यों का अध्ययन किया और देखा कि उसने शिक्षा के क्षेत्र में महान योगदान दिया। उसके शैक्षिक विचारों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उसने शिक्षा को एक स्वाभाविक प्रक्रिया माना है जिसका उद्देश्य बालक की स्वाभाविक शक्तियों और योग्यताओं का आन्तरिक विकास करना है। रूसो के विचारों ने शिक्षा के समस्त पहलुओं को प्रभावित किया है। पाठ्यक्रम निर्माण के सम्बन्ध उसने बालक की विभिन्न अवस्थाओं जैसे-शैशववस्था,

बाल्यावस्था, किशोरावस्था और युवावस्था को ध्यान में रखा है और उसी के अनुसार पाठ्य विषयों का निर्धारण किया है। रूसो ने सामाजिक संस्थाओं तथा पुस्तकीय शिक्षा का विरोध किया है। स्त्री शिक्षा के प्रति रूसो के विचार बड़े ही अनुदार एवं अनैतिक थे। वह स्त्रियों को पुरूष के सुख साधन के रूप में मानता है इसलिए उसकी शिक्षा भी इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे वे पति को प्रसन्न रख सकें और गृहकार्यों को कुशलतापूर्वक निभा सकें। वह स्वंतत्रता के सिद्धांत और प्राकृतिक परिणामों के सिद्धांत द्वारा अनुशासन स्थापित करने का समर्थक था। रूसो के शैक्षिक विचार अनेक दोषों के होते हुए भी अनेक गुणों से युक्त है। उसके शैक्षिक विचारों का प्रभाव हमारी आज की वर्तमान शिक्षा के हर क्षेत्र में दिखलाई पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

शुक्ला रमा एवं सिंह मधुरिमा (तृतीय नवीनतम संस्करण), शिक्षा के दार्शनिक आधार, इलाहाबाद, आलोकः प्रकाशन।

माथुर एस0एस0 (2007-08), शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

पाल एस0के0 गुप्त लक्ष्मी नारायण, मोहन मदन (2008-09), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद: न्यू कैलाश प्रकाशन।

जायसवाल सीताराम (2020). शिक्षा के दार्शनिक आधार, लखनऊ :प्रकाशन केन्द्र।

ओड़ लक्ष्मीलाल के (2010). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

गुप्त लक्ष्मी नारायण एवं मोहन मदन (2009). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद: कैलाश प्रकाशन।

पाल एम0के0, गुप्त लक्ष्मी नारायण, व मोहन मदन (1994). शिक्षा दर्शन, इलाहबाद: कैलाश प्रकाशन।

सारस्वत मालती, मोहन मदन (2000). भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं, इलाहाबाद: कैलाश प्रकाशन।

एन0सी0एफ0 (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।

गुप्ता एस0पी0 (2018). मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

पाण्डेय कामता प्रसाद (2005). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजिक आधार, वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

मालवीय राजीव एवं विजिटिंग फैकेल्टी, चर (2012). शिक्षा के मूल सिद्धांत, इलाहाबाद:शारदा पुस्तक भवन।

****